

स्याही स्त्री. (फा.) 1. कालिमा 2. अंधकार, अंधेरा 3. काजल 4. मसि, रोशनाई मुहा. स्याही छाना-चेहरे का रंग काला पड़ना; स्याही लगना-अपयश होना, कलंक लगना, बदनामी होना।

स्याही चूस/स्याही सोख पुं. (देश.) स्याही सोखने वाला कागज विशेष जो कुछ मोटा और खुरदरा होता है, सोखता।

स्यू स्त्री. (तत्.) सूत, सूत्र।

स्यूत वि. (तत्.) 1. बुना हुआ 2. सिला हुआ पुं. थैला।

स्यूति स्त्री. (तत्.) 1. कपड़े आदि सिलने की क्रिया या भाव, सिलाई 2. सीचन 3. थैली 4. संतान।

स्यून पुं. (तत्.) 1. किरण, रश्मि 2. सूर्य 3. थैली।

स्यूम पुं. (तत्.) 1. किरण, रश्मि 2. जल, पानी।

स्यों अव्य. (तद्.) 1. सहित, साथ उदा. कहूँ हंसिनी हंस स्यों चित चोरै-केशव 2. समीप, पास।

स्योकाई स्त्री. (देश.) सेवक का कार्य, सेवा कार्य, सेवकाई उदा. सेवकु सो जो करै सेवकाई -तुलसी।

स्योती स्त्री. (देश.) सेवती, सफेद गुलाब।

स्योन पुं. (तत्.) 1. किरण, रश्मि 2. सूर्य 3. सुख 4. थैला।

स्योनाक पुं. (तद्.) श्योनाक (सोना-पाढ़ा)।

स्योरंजनी पुं. (तत्.) संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

स्यों क्रि.वि. (तद्.) सहित, साथ।

संस पुं. (तत्.) 1. गिरना 2. पतन होना 3. फिसलना।

संसन वि. (तत्.) 1. गिरने या नीचे लाने वाला 2. गर्भपात करने वाला 3. दस्तावर पुं. 1. गिरना, पतन होना 2. गर्भपात 3. दस्त लाने वाली दवा।

संसिनी स्त्री. (तत्.) 1. एक प्रकार का योनि रोग जिसमें रति-प्रसंग के समय योनि बाहर निकल आती है, और गर्भ नहीं ठहरता 2. गर्भसाव।

संसी वि. (तत्.) 1. गिरने वाला, पतनशील 2. असमय में गिरने वाला गर्भ पुं. 1. सुपारी का पेड़ 2. पीलू वृक्ष।

स्रक स्त्री. (तत्.) 1. फूलों की माला 2. विशेष रूप से फूलों की ऐसी माला, जिसे सिर पर लपेटते हैं 3. ज्योतिष में एक प्रकार का योग 4. एक वृत्त का नाम, जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है तथा छठे और नवें वर्णों पर यति होती है।

स्रग स्त्री. (तद्.) फूलों की माला या गजरा, पुष्पमाला उदा. रचि स्रक कुसुम सुगंध सेज सजि -सूरसागर।

स्रगाल पुं. (देश.) शृगाल, सियार।

स्रग्दाम पुं. (तत्.) वह डोरा या सूत, जिसमें माला के फूल पिरोए रहते हैं।

स्रग्धर वि. (तत्.) पुष्प-हार धारण करने वाला।

स्रग्धरा स्त्री. (तत्.) फूलों की माला धारण करने वाली स्त्री, मालाधारिणी स्त्री छंद. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण और 3 यगण के योग से 21 वर्ण होते हैं तथा 7-7 पर यति होती है।

स्रग्वान वि. (तत्.) 1. जो माला पहने हो 2. जो स्रक् नामक माला पहने हो।

स्रग्विणी स्त्री. (तत्.) 1. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं 2. एक देवी का नाम।

स्रग्वी वि. (तत्.) जो माला पहने हो, मालाधारी।

स्रज पुं. (तत्.) एक विश्वेदेवा का नाम।

स्रजन पुं. (तद्.) रचना या सृष्टि करने का भाव, रचना, सृष्टि रचना।

स्रजना स.क्रि. (तद्.) 1. रचना करना 2. विश्व की रचना करना, सृष्टि रचना, सृजना।

स्रणिता वि. (देश.) लाल, शोणित।

स्रद्धा स्त्री. (तद्.) श्रद्धा।

स्रम पुं. (तद्.) 1. श्रम, मेहनत 2. थकान, थकावट उदा. फिरत फिरत बहुतै स्रम आवै-सूरदास।